हफ़्तावार रिसाला : 422
Weekly Booklet : 422

Sooraj Aur Chand Grahan (Hindi)

MAKTABATUL MADINA INDIA

सूरज और चांद ग्रहन

सफ़हात : 21

हाजियों को सताने वाला 04
चांद और सूरज तैर रहे हैं 10
चांद और सूरज गहन लगने की वज्ह 11
ग़लत़ रस्मो रवाज 13

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सूरज और चांद ग्रहन

दुआए अत़्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 21 सफ़ह़ात का रिसाला "सूरज और चांद ग्रहन" पढ़ या सुन ले उसे अपने प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना । اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

बारगाहे रिसालत में रोज़ाना ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करते

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं हर रोज़ सह़री के वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होता और अ़र्ज़ करता : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ (نسائی، 3/208، حدیث:1210)

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम   शम्अ़ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी मुबारक में सूरज ग्रहन

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में (सख़्त गर्मी के दिनों में) सूरज को ग्रहन लगा तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी

(दौराने नमाज़ ही नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थोड़ा सा आगे बढ़े फिर थोड़ा सा पीछे हटे, नमाज़ के बाद) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने देखा कि आप (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अपनी जगह से किसी चीज़ को पकड़ रहे थे फिर हम ने देखा कि आप (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पीछे हटे। अल्लाह पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे जन्नत दिखाई गई तो मैं उस में से एक ख़ोशा तोड़ने लगा अगर मैं उस ख़ोशे को तोड़ लेता तो तुम रहती दुन्या तक उस में से खाते रहते फिर मुझ पर जहन्नम पेश की गई तो मैं इस डर से पीछे हटा कि तुम्हें कोई नुक़्सान न पहुंचे, मैं ने उस में एक लम्बी काली औरत को देखा जिसे बिल्ली की वज्ह से अ़ज़ाब दिया जा रहा था कि उस ने एक बिल्ली को क़ैद कर दिया, न उसे खाना खिलाया, न उसे पानी पिलाया और न ही आज़ाद किया कि वोह ज़मीन के कीड़े मकोड़े खा लेती और मैं ने जहन्नम में अबू समामा अ़म्र बिन लुह़य्य को देखा कि अपनी आंतों को जहन्नम में घसीट रहा है। लोग कहते हैं कि सूरज और चांद को किसी बड़ी शख़्सिय्यत की मौत के सबब गहन लगता है तो सुन लो कि सूरज और चांद अल्लाह पाक की निशानियों में से दो निशानियां हैं, जो अल्लाह पाक तुम्हें दिखाता है, जब तुम उन्हें गहन लगा देखो तो नमाज़ पढ़ो ह़त्ता कि गहन खुल जाए। (بخاری،1/265،حدیث:748۔ مسلم،ص351،حدیث:2100۔ مسند ابی داؤد طیالسی،ص241،حدیث:1754مفہوماً وملخصًا)

शौहर की नाशुक्री

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ भी हैं कि (अल्लाह पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले) प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने आज की त़रह़ कोई ख़ौफ़नाक मन्ज़र कभी न देखा और मैं ने देखा कि अक्सर दोज़ख़ी औरतें हैं, अ़र्ज़ की, क्यूं या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ? फ़रमाया : कि कुफ़्र करती हैं, अ़र्ज़ की गई : अल्लाह पाक के साथ कुफ़्र करती हैं ? फ़रमाया :

शौहर की नाशुक्री करती हैं और एह्सान नहीं मानती हैं, अगर तुम उन में से किसी के साथ उम्र भर एह्सान करो फिर ज़रा सी बात (ख़िलाफ़े मिज़ाज) देखेंगी तो कहेंगी : मैं ने कभी कोई भलाई तुम से देखी ही नहीं। (بخاری،1/360،حدیث:1052)

येह गहन कब लगा था ?

ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आज़म, शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अल्लामा शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : जिस दिन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साहिबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللهُ عَنْهُ का विसाल हुवा था उस दिन येह गहन लगा था। (نزہۃ القاری،2/625،تحت الحدیث:632)

सुल्त़ाने दो आलम की हुकूमत

जन्नत से ख़ोशा तोड़ने वाली ह़दीसे पाक की शर्ह़ में ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से दो मस्अले मालूम हुए : एक येह कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत और वहां के फलों वग़ैरा के मालिक हैं कि ख़ोशा तोड़ने से रब ने मन्अ न किया, (बल्कि) ख़ुद न तोड़ा, क्यूं न हो कि रब्बे करीम फ़रमाता है : ﴿اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْكَوْثَرَؕ۝۱﴾ "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब ! बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अत़ा फ़रमाईं" इसी लिये हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कौसर का पानी बारहा पिलाया। दूसरे येह कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रब्बे करीम ने वोह त़ाक़त दी है कि मदीने में खड़े हो कर जन्नत में हाथ डाल सकते हैं और वहां तसर्रुफ़ कर सकते हैं, जिन का हाथ मदीने से जन्नत में पहुंच सकता है क्या उन का हाथ हम जैसे गुनहगारों की दस्तगीरी के वासित़े नहीं पहुंच सकता और अगर येह कहो कि जन्नत क़रीब आ गई थी तो जन्नत और वहां की नेमतें हर जगह ह़ाज़िर हुईं। बहर ह़ाल इस ह़दीस से या हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ाज़िर मानना पड़ेगा या जन्नत को।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/382)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम ! हैं सख़ी के माल में हक़दार हम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 83)

हाजियों को सताने वाला

ऊपर बयान की गई रिवायत में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक औरत को बिल्ली पर ज़ुल्म करने के सबब और अम्र बिन लुहय्य नामी शख़्स को देखा, येह ज़मानए जाहिलिय्यत में एक शख़्स था, इस के पास एक छड़ी थी जिस से वोह हाजियों की चीज़ छड़ी की मूंठ (यानी मुड़े हुए सिरे) से खींच लिया करता था अगर हाजी को पता चल जाता कि मेरी चीज़ किसी ने खींच ली तो कह देता कि तुम्हारी चीज़ मेरी छड़ी की मूंठ से लग गई और उसे पता न चलता तो येह चीज़ उठा ले जाता उसे साहिबे मिहजन कहते हैं।

येह भी याद रखिये कि बिला वज्हे शरई जानवरों को तक्लीफ़ पहुंचाना, मारना ना जाइज़ व गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। वालिदैन को चाहिये कि छोटे बच्चों को समझाएं जो ख़्वाह म ख़्वाह च्यूंटियों, मख्खियों और कुत्ते, बिल्लियों वग़ैरा को तक्लीफ़ पहुंचा कर उन की चीख़ पुकार या तक्लीफ़ से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं। मेरे पीरो मुर्शिद, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने कलाम में बच्चों को कुछ यूं नसीहतें फ़रमाते हैं :

मत कुत्ते बिल्ली को मारो तड़पेंगे बेचारे बच्चो !
कीड़ों को बेकार न मारो अच्छे बच्चो ! प्यारे बच्चो !
च्यूंटी को बेकार न मारो अच्छे बच्चो ! प्यारे बच्चो !
हो जाए अत्तार की बख़्शिश मिल के दुआ दो सारे बच्चो !

(ग़ैर मत़बूआ)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सब जहां तेरे लिये है और तू ख़ुदा के वासित़े

अल्लाह पाक की मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र करने में अक़्लमन्दों के लिये निशानियां हैं, अल्लाह पाक अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मुह़म्मदे अरबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल की हुई रोशन किताब क़ुरआने करीम के पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 190 में फ़रमाता है :

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अक़्लमन्दों के लिये।

सूफ़ियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم फ़रमाते हैं कि एक घड़ी की फ़िक्र हज़ार साल के उस ज़िक्र से अफ़ज़ल है जो बिग़ैर फ़िक्र के हो।

(तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान, पा. 17, अल अम्बिया, तह़तुल आयह : 32, 6/316)

सूरए रह़मान में इरशाद होता है : ﴿اَلشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿۵﴾﴾ (پ27، الرحمٰن:5)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "सूरज और चांद ह़िसाब से हैं।"

अल्लाह पाक ने इस आयत में आस्मानी नेमतों में दो ऐसी नेमतें बयान फ़रमाईं जो ज़ाहिरी त़ौर पर नज़र आती हैं और वोह नेमतें सूरज और चांद हैं, इन नेमतों की अहमिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अगर सूरज न होता तो अन्धेरा कभी ख़त्म ही न होता और अगर चांद न होता तो बहुत सारी ज़ाहिरी नेमतें ख़त्म हो कर रह जातीं और उन का सब से बड़ा फ़ाएदा येह है कि सूरज और चांद मुअय्यन (यानी मुक़र्रर) अन्दाज़े के साथ अपने अपने बुरूज और मनाज़िल में ह़रकत करते हैं क्यूंकि अगर सूरज ह़रकत करने के बजाए एक ही जगह खड़ा रहे तो उस से कोई भी फ़ाएदा नहीं उठा सकता और अगर उस की गर्दिश लोगों को मालूम न हो तो वोह मुआमलात ठीक त़रह़ से सरअन्जाम नहीं

दे सकते और उन का एक फ़ाएदा येह है कि औक़ात के हिसाब सालों और महीनों का शुमार उन्हीं की रफ़्तार से होता है।

(تفسیر کبیر، پ27، الرحمٰن، تحت الآیۃ:5، 10/339۔ تفسیر مدارک، پ27، الرحمٰن، تحت الآیۃ:5، ص1191، ملتقطاً)

सूरज, चांद और सितारे अल्लाह करीम की नेमत और बड़ी मख़्लूक़ हैं। अल्लाह पाक ने इन में हमारे लिये बे शुमार फ़वाइद रखे हैं। फ़ल्कियाती रिपोर्ट्स के मुताबिक़ साल 2025 का दूसरा चांद ग्रहन (जो हिन्द में भी नज़र आएगा) 7 सितम्बर को हिन्दुस्तानी वक़्त के मुताबिक़ रात के 9 बज कर 57 मिनट पर शुरूअ होगा। रात के 11 बज कर 42 मिनट पर येह मुकम्मल चांद गहन अपने उरूज पर पहुंचेगा जब कि रात के 1 बज कर 27 मिनट पर येह चांद ग्रहन ख़त्म हो जाएगा जब कि इसी साल का दूसरा सूरज ग्रहन 21 सितम्बर को हिन्दुस्तानी वक़्त के मुताबिक़ रात के 11 बजे शुरूअ होगा। रात के 1 बज कर 12 मिनट पर येह अपने उरूज पर पहुंचेगा जब कि रात के 3 बज कर 24 मिनट पर सूरज ग्रहन ख़त्म हो जाएगा लेकिन येह सूरज ग्रहन हिन्द में नहीं देखा जा सकेगा।

दावते इस्लामी का शोबा फ़ल्कियात सूरज और चांद गहन की फ़ल्कियाती रिपोर्ट्स मुकम्मल रीसर्च के साथ पेश करता है, तफ़्सीलात के लिये उन्हें देखा जा सकता है।

सूरज ग्रहन और चांद ग्रहन किसे कहते हैं ? अवाम में सूरज ग्रहन और चांद ग्रहन के मुतअल्लिक़ क्या क्या ग़लत फ़हमियां पाई जाती हैं ? चांद ग्रहन और सूरज ग्रहन की क्या हक़ीक़त है ? हमारा प्यारा दीने इस्लाम इस के बारे में क्या फ़रमाता है ? दुन्या में लोग इस मौक़अ पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से लुत्फ़ अन्दोज़ होते (यानी Enjoy करते) हैं, हमारे प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की

मदनी मुहम्मदे अरबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे मौक़अ पर क्या क्या करते थे ? इन दिलचस्प और अहम मालूमात पर मुश्तमिल येह रिसाला "सूरज ग्रहन और चांद ग्रहन" पढ़िये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ मालूमात में इज़ाफ़ा होगा। साल के मुख़्तलिफ़ महीनों और दिनों में चांद ग्रहन और सूरज ग्रहन के मवाक़ेअ आते रहते हैं, उमूमन साल में दो मरतबा सूरज ग्रहन और दो मरतबा चांद ग्रहन होता है इन दिनों में अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये बिल ख़ुसूस येह रिसाला तक़्सीम कीजिये और ख़ूब सवाब कमाइये। अल्लाह करीम हमें अपनी मारिफ़त (यानी पहचान) नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

अज़ाब के आसार डरावा हैं

मुसलमानों का अक़ीदा येह है कि अल्लाह पाक तन्हा जो चाहे करता है, लेकिन वोह अज़ाब के अस्बाब भी बनाता है और रहमत के अस्बाब भी बनाता है, अज़ाब के अस्बाब से अपने बन्दों को डराता है ताकि वोह तौबा करें और अल्लाह पाक की बारगाह में गिड़गिड़ाएं जैसे सूरज ग्रहन और चांद ग्रहन अल्लाह पाक की निशानियों में से दो निशानियां हैं जिन से वोह अपने बन्दों को डराता है ताकि तौबा करने वालों की जांच फ़रमाए इस से मालूम हुवा कि सूरज ग्रहन और चांद ग्रहन वोह सबब हैं जिन से अज़ाब आने का ख़ौफ़ होता है।

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को हुक्म फ़रमाया कि वोह चांद के शर से अल्लाह पाक की पनाह मांगें और इरशाद फ़रमाया : "येह अन्धेरा डालने वाला है जब डूबे।"

(ترمذی،5/240،حدیث:3377)

अल्लाह पाक ने "अन्धेरा डालने वाला जब डूबे" उस के शर से पनाह मांगने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है, येह रात है जब अन्धेरा हो जाए क्यूंकि उस वक़्त इन्सानी व जिन्नाती शैतान फैल जाते हैं। चांद से पनाह मांगने का हुक्म इस

लिये है कि येह रात की निशानी है और इस बात में इशारा है कि रात का डरावना शर चांद निकल आने से दूर नहीं हो जाता और दिन की त़रह़ नहीं हो जाता बल्कि चांदनी रात में भी ख़ुदा की पनाह मांगी जाए। (لطائف المعارف، ص145)

सूरज ग्रहन के ह़वाले से दिलचस्प मालूमात

सूरज गहन का सबब अहले हैअत येह बताते हैं कि चांद, सूरज और ज़मीन के दरमियान ह़ाइल हो जाता है और येह सिर्फ़ चांद की अठ्ठाईस या उन्तीस तारीख़ को हो सकता है, दूसरी तारीख़ों में मुह़ाल है इस लिये चांद की दस या चार या चौदह को सूरज गहन होना मुह़ाल है।

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अल्लामा शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आम आदत की वज्ह से येही सह़ीह़ है मगर अल्लाह पाक इस पर क़ादिर है कि वोह सूरज गहन आम आदत के बिग़ैर लगा दे बल्कि मेरा गुमान येह है कि इस गहन के लगने पर लोगों का जो गुमान हुवा कि ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللهُ عَنْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ की वज्ह से लगा है, इसी वज्ह से अठ्ठाईस या उन्तीस के बजाए दस को लगा था, दस को गहन लगने का कोई सबबे आदी नहीं था तो लोगों ने वोह गुमान किया। (نزہۃ القاری، 2/625، تحت الحدیث:632)

सूरज, चांद और सितारे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सूरज अल्लाह करीम की नेमत है, इस से रोशनी के साथ साथ सर्दियों में धूप ह़ासिल की जाती है। सूरज की तपिश (यानी गर्मी) से फ़स्लें पकती हैं जो इन्सान की ग़िज़ा बनती है। चांद भी अल्लाह करीम की नेमत है। सूरज ज़मीन से कई गुना ज़ियादा बड़ा है ब एतिबार क़ुत्र सूरज ज़मीन से 109 गुना बड़ा जब कि चांद ज़मीन से 14 गुना छोटा है और ज़मीन से सूरज औसत़न 15 करोड़ किलो मीटर जब कि चांद 4 लाख किलो मीटर दूर है, सूरज की रोशनी गर्म जब कि चांद की रोशनी ठन्डी होती है। दिन में सूरज और रात के

अन्धेरे में चांद से रोशनी ह़ासिल की जाती है, जदीद टेक्नोलॉजी के इस दौर से पहले, लोग चांद सितारों की मदद से रास्ते पहचानते और उन की रोशनी में सफ़र किया करते थे।

हुक्म के पाबन्द

अल्लाह पाक की त़रफ़ से अ़ता की गई ड्यूटी के मुत़ाबिक़ सूरज, चांद और सितारे अपने अपने मह़वर में गर्दिश करते (यानी अपनी हुदूद में घूमते) रहते हैं और उस के हुक्म से ज़र्रा भर भी बाहर नहीं जाते जैसा कि पारह 8, सूरतुल आराफ़ की आयत नम्बर 54 में इरशाद होता है : ﴿يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۞﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जहान का।" एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۞

(پ13، الرعد:2)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र किया हर एक एक ठहराए हुए वादे तक चलता है अल्लाह काम की तदबीर फ़रमाता और मुफ़स्सल निशानियां बताता है कहीं तुम अपने रब का मिलना यक़ीन करो।

तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान में है : यानी अपने बन्दों के मनाफ़ेअ और उन की ज़रूरिय्यात को पूरा करने के लिये सूरज और चांद को काम पर लगा दिया और वोह हुक्म के मुत़ाबिक़ गर्दिश में हैं। सूरज और चांद में से हर एक, एक मुक़र्रर किये हुए वादे यानी दुन्या के फ़ना होने तक चलता रहेगा। ह़ज़रते अब्दुल्लाह बिन

अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि "اَجَلٍ مُّسَمًّی" से सूरज और चांद के दरजात और मनाज़िल मुराद हैं यानी वोह अपने मनाज़िल और दरजात में एक ह़द तक गर्दिश करते हैं इस से तजावुज़ नहीं कर सकते । इस की तह़क़ीक़ येह है कि अल्लाह पाक ने सूरज और चांद में से हर एक के लिये ह़रकत में तेज़ी और आहिस्तगी की एक मख़्सूस मिक़्दार के साथ ख़ास जिहत की त़रफ़ ख़ास गर्दिश मुक़र्रर फ़रमाई है । (तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान, पा 13, अर्रअद, तह़तुल आयत : 2, 5/75)

चांद और सूरज तैर रहे हैं

وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّیْلَ وَ النَّهَارَ وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَؕ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ﴿۳۳﴾

(پ17، الانبیاء، 33)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने बनाए रात और दिन और सूरज और चांद हर एक एक घेरे में पैर (तैर) रहा है ।

येह सब एक घेरे में ऐसे तैर रहे हैं जिस त़रह़ तैराक पानी में तैरता है ।

(تفسیر خازن، پ17، الانبیاء، تحت الآیۃ:33، 3/276)

सूरज ख़ादिम तो चांद मुलाज़िम

हमारे आक़ा व मौला मुह़म्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बअ़त़ाए परवर्दगार, दोनों जहानों में मालिको मुख़्तार हैं और चांद, सूरज आप के ताबए फ़रमान (यानी फ़रमां बरदार) हैं । मेरे आक़ा इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने नातिया कलाम में अ़र्ज़ करते हैं :

तेरी मर्ज़ी पा गया सूरज फिरा उल्टे क़दम
तेरी उंगली उठ गई मह का कलेजा चिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 52)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक़ामे सहबा पर जब मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ख़िदमते आली में रहने के सबब नमाज़े अ़स्र न

पढ़ने की वज्ह से ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त ग़मज़दा देखा तो दो जहां के सरदार, अल्लाह पाक की अ़ता से बा इख़्तियार आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरज को हुक्म दिया, वोह फ़ौरन वापस आ गया और जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से चांद के दो टुकड़े करने के मोजिज़े का मुत़ालबा किया तो महरो माह (यानी सूरज और चांद) के आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इशारा पा कर चांद दो टुकड़े हो गया। एक और मक़ाम पर आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

चांद इशारे का हिला हुक्म का बांधा सूरज
वाह क्या बात शहा तेरी तवानाई की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 154)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शायद अश्आ़रे रज़ा से रोशनी लेते हुए लिखते हैं :

चांद दो टुकड़े हुवा सदक़े गया जब इशारा मुस्त़फ़ा का पा गया
पा के मर्ज़ी सरवरे कौनैन की डूबा सूरज फिर पलट कर आ गया

(वसाइले बख़्शिश, स. 206)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुत़्बे में "اَمَّا بَعْدُ" कहना

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरज गहन के वक़्त ख़ुत़्बा दिया और उस में "اَمَّا بَعْدُ" फ़रमाया। (نسائی، ص260، حدیث:1498)

चांद और सूरज गहन लगने की वजह

येह चांद व सूरज की गर्दिश पर मुन्ह़सिर है। अपनी ह़ालत के एतिबार से ज़मीन और चांद तारीक हैं और येह दोनों सूरज से रोशनी ह़ासिल करते हैं। साल में उमूमन दो मरतबा ज़मीन की सीध में एक ही रुख़ पर सूरज और चांद इस त़रह़

आ जाते हैं कि चांद आड़ बन जाता है और सूरज की रोशनी को ज़मीन के बाज़ हिस्सों पर पहुंचने नहीं देता जिस से ज़मीन वालों को सूरज कुल्ली या जुज़्वी तौर पर तारीक दिखाई देता है येह सूरज ग्रहन कहलाता है इसी तरह साल में उमूमन दो मरतबा ज़मीन के एक तरफ़ सूरज और दूसरी तरफ़ चांद एक सीध में इस तरह आ जाते हैं कि ज़मीन आड़ बन जाती है और सूरज की रोशनी को चांद पर कुल्ली या जुज़्वी तौर पर पहुंचने नहीं देती जिस से ज़मीन वालों को चांद कुल्ली या जुज़्वी तारीक दिखाई देता है येह चांद ग्रहन कहलाता है।

मुकम्मल सूरज ग्रहन

मुकम्मल सूरज ग्रहन उस वक़्त लगता है जब चांद का फ़ासिला ज़मीन से इतना कम हो कि जब वोह सूरज के सामने आए तो सूरज मुकम्मल तौर पर चांद के पीछे छुप जाए। इस में सूरज के मुकम्मल छुप जाने की वज्ह से कुछ अन्धेरा हो जाता है और दिन के वक़्त सितारे नज़र आना शुरूअ हो जाते हैं। कहते हैं कि एक मक़ाम पर ज़ियादा से ज़ियादा सात मिनट चालीस सेकन्ड के लिये ऐसा हो सकता है। मगर आम तौर पर इस का दौरानिय्या इस से कहीं कम होता है।

चांद ग्रहन

जब ज़मीन के एक जानिब चांद और दूसरी जानिब सूरज आ जाए (येह उमूमन चौदहवीं रात यानी (Full Moon) में होता है) तो बाज़ औक़ात ज़मीन का साया जुज़्वी या कुल्ली चांद पर पड़ता है और चांद तारीक नज़र आने लगता है। इसे चांद ग्रहन कहते हैं। चांद ग्रहन कभी जुज़्वी और कभी कुल्ली होता है। जुज़्वी की दो क़िस्में हैं : पहली गहरा साया (Umbral), दूसरी हल्का साया (Penumbral), गहरे साये वाला चांद गहन नज़र आता है जब कि हल्के साये वाला चांद गहन नज़र नहीं आता, शरई एतिबार से सिर्फ़ गहरे साये वाले गहन पर ही नमाज़ है।

ग़लत़ रस्मो रवाज

सूरज ग्रहन और चांद ग्रहन के बारे में लोगों के मुख़्तलिफ़ अक़ाइदो नज़रिय्यात पाए जाते हैं, बाज़ मज़ाहिब इसे मन्हूस समझते हैं और बाज़ के नज़दीक येह अल्लाह पाक के नाराज़ होने की अलामत है। ❀ किसी का अक़ीदा है कि चांद और सूरज पहले इन्सान थे, इन्हों ने नीची ज़ात के लोगों से कुछ क़र्ज़ लिया और अदा न किया इस सज़ा में उन्हें ग्रहन लगता है। चुनान्चे ग़ैर मुस्लिम ग्रहन के वक़्त नीची ज़ात के लोगों को ख़ैरात देते हैं और मांगने वाले भिकारी भी कहते हैं कि सूरज महाराज का क़र्ज़ चुकाओ। ❀ और कहीं ग्रहन के बारे में येह ख़याल है कि ग्रहन उस वक़्त लगता है जब सूरज को बलाएं और ख़ौफ़नाक जानवर निगल लेते हैं, एक वेबसाइट से ली गई मालूमात के मुताबिक़ जब भी चांद को ग्रहन लगता तो क़दीम चीन के लोग इकठ्ठे मिल के पूरी क़ुव्वत से शोर मचाते थे, इन का अक़ीदा था कि चांद को एक बहुत बड़ा अज़्दहा खा रहा है, हमारा येह शोर चांद को बचाने की कामयाब कोशिश है। चांद ग्रहन अपने वक़्त पर ख़त्म हो जाता लेकिन येह लोग अपनी कामयाबी समझ कर इस का जशन मनाते और अगली दफ़्आ पहले से ज़ियादा शोर मचाया करते ❀ लोगों का एक ग़लत़ ख़याल येह भी है कि जब सूरज या चांद को ग्रहन लगता है तो ह़ामिला गाए, भेंस, बकरी और दीगर जानवरों के गले से रस्सी या ज़न्जीर खोल देनी चाहिये ताकि इन पर बुरा असर न पड़े ❀ बाज़ अलाक़ों में ग्रहन के वक़्त कमज़ोर अक़ीदे वाले ख़ुद को कमरों में बन्द कर लेते हैं ताकि ब क़ौल इन के वोह ग्रहन के वक़्त ख़ारिज होने वाली नुक़्सान देह लहरों से बच सकें ❀ बाज़ मुआशरों में जिस दिन ग्रहन लगता है अक्सर लोग खाना पकाने से गुरेज करते हैं क्यूंकि इन का ख़याल है कि ग्रहन के वक़्त ख़त़रनाक जरासीम पैदा होते हैं ❀ कई मशरिक़ी मुल्कों में इल्मे नुजूम के माहिरीन सूरज ग्रहन से मुन्सलिक पेशनगोइयां करते हैं जिन में किसी तबाही या

नुक़्सान की निशान देही की जाती है, मसलन चोरी, इग़्वा, क़त्लो ग़ारत, ख़ुद कुशियां और तशद्दुद के वाक़िआत बिल ख़ुसूस ख़वातीन की अम्वात में इज़ाफ़ा, ला क़ानूनिय्यत और बे इन्साफ़ी के वाक़िआत कसरत से होने की पेशनगोई की जाती है। अल ग़रज़ दुन्या में सूरज ग्रहन, चांद ग्रहन के बारे में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के तअस्सुरात रखने वाले लोग मौजूद हैं। ग्रहन किसी की मौत और ज़िन्दगी की वज्ह से नहीं लगता। अरब मुआशरे में भी सूरज और चांद ग्रहन के मुतअल्लिक़ आम ख़याल था कि येह किसी बड़े वाक़िए मसलन किसी की वफ़ात या पैदाइश पर वुक़ूअ पज़ीर होता है। जब दुन्या के नक़्शे पर इस्लाम की इन्क़िलाबी दावत उभरी तो अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन वहमों को ख़त्म किया। जिस दिन हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साहि़बज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللهُ عَنْه इन्तिक़ाल कर गए उसी दिन सूरज में ग्रहन लगा। बाज़ लोगों ने ख़याल किया कि येह ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللهُ عَنْه के ग़म में वाक़ेअ हुवा है चुनान्चे, हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को सूरज गहन की नमाज़ पढ़ने के बाद ख़ुत़्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया : सूरज और चांद अल्लाह पाक की निशानियों में से दो निशानियां हैं, उन्हें ग्रहन किसी की मौत और ज़िन्दगी की वज्ह से नहीं लगता। लिहाज़ा जब तुम उसे देखो तो अल्लाह पाक को पुकारो, उस की बड़ाई बयान करो, नमाज़ पढ़ो और सदक़ा दो।

(بخاری، 1/363، 357، حدیث: 1060، 1044، ملخصًا) (बद शुगूनी, स. 78 ता 81)

इस्लाम, ग्रहन के बारे में क्या फ़रमाता है ?

इस्लाम इन लग़्विय्यात (यानी फ़ुज़ूलिय्यात) से अलाह़दा है, इस्लाम के मुताबिक़ येह अल्लाह की क़ुदरत की निशानियां हैं अल्लाह पाक जब चाहे चांद सूरज को नूरानी कर दे और जब चाहे इन का नूर छीन ले। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/379) अल्लाह पाक इस पर क़ादिर है कि जब चाहे चांद का नूर सल्ब फ़रमा दे

बिग़ैर इस के कि सूरज और चांद के दरमियान ज़मीन ह़ाइल हो जो कि चांद ग्रहन का सबब है।

सूरज ग्रहन और ह़ामिला औरत

मग़रिबी मुल्क में रहने वाली एक दुन्यावी तालीम याफ़्ता औरत सूरज ग्रहन से चन्द रोज़ पहले सख़्त परेशान थी क्यूंकि इस के हां पहले बच्चे की विलादत होने वाली थी और इस से पहले सूरज ग्रहन के बच्चे पर मुम्किना असरात का ख़ौफ़ इसे तशवीश में मुब्तला किये हुए था, उस ने अपनी डॉक्टर से पूछने के लिये फ़ोन किया कि क्या बच्चे को ग्रहन के असरात से बचाने के लिये इस से पहले विलादत मुम्किन है ? डॉक्टर ने उसे दिलासा देते हुए समझाया कि उसे परेशान होने की ज़रूरत नहीं है और ग्रहन के असरात की ह़क़ीक़त वहम है। (बद शुगूनी, स. 79) ❀ ग्रहन के वक़्त ह़ामिला ख़वातीन को कमरे के अन्दर रहने और सब्ज़ी वग़ैरा न काटने की हिदायत की जाती है ताकि इन के बच्चे किसी पैदाइशी नक़्स के बिग़ैर पैदा हों ❀ ग्रहन के वक़्त ह़ामिला ख़वातीन को सिलाई कढ़ाई से भी मन्अ किया जाता है क्यूंकि येह ख़याल किया जाता है कि इस से बच्चे के जिस्म पर ग़लत़ असर पड़ सकता है। आइये ! अमीरे अहले सुन्नत से किये गए एक सुवाल की रोशनी में मालूम करते हैं कि क्या वाक़ेई सूरज ग्रहन के असरात का ह़ामिला औरत पर कुछ असर पड़ता है या नहीं। (बद शुगूनी, स. 79)

सुवाल : क्या ह़ामिला औरत या उस की औलाद पर सूरज ग्रहन या चांद ग्रहन का कोई असर पड़ता है ?

जवाब : येह बात मशहूर है कि अगर औरत चांद ग्रहन में क़ैंची चलाएगी तो बच्चे के होंट कट जाएंगे या फ़ुलां मुआमला हो जाएगा वग़ैरा। याद रखिये ! इस त़रह़ के जो भी मुआमलात हैं शरीअत इन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई नहीं करती अलबत्ता कभी ऐसा भी होता है कि किसी के हां इत्तिफ़ाक़ से कोई होंट कटा बच्चा पैदा हो

जाता है तो कहते हैं कि इस की मां ने चांद ग्रहन में क़ैंची चलाई थी ह़ालां कि इस की कोई शरई ह़क़ीक़त नहीं है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/40)

सूरज ग्रहन और चांद ग्रहन के वक़्त क्या करना चाहिये ?

क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में येह पता चला कि सूरज गहन हो या चांद गहन येह मवाक़ेअ लुत़्फ़ अन्दोज़ होने या जशन मनाने के नहीं हैं, बाज़ लोग सूरज ग्रहन का (मख़्सूस शीशों के ज़रीए) नज़ारा करने के लिये जम्अ होते हैं। डॉक्टरों का कहना है कि ग्रहन के वक़्त सूरज को बराहे रास्त देखने से आंख की बीनाई भी जा सकती है। हमें चाहिये कि ऐसे मौक़अ को गुनाहों और ग़फ़्लत में गुज़ारने की बजाए दौड़ कर अल्लाह पाक को याद करें, गुनाहों से सच्ची तौबा कर के राहे सुन्नत पर चलने का पक्का इरादा करें। क़ियामत के लिये सूर फूंके जाने वाले वक़्त को याद करें कि जब चांद, सूरज और सितारे बे नूर हो जाएंगे। सूरज ग्रहन, चांद ग्रहन की नमाज़ अदा करें। सरूज ग्रहन की नमाज़ को "नमाज़े कुसूफ़" और चांद ग्रहन की नमाज़ को "नमाज़े ख़ुसूफ़" कहा जाता है। कुसूफ़ के माना हैं ह़ालत का बदलना और ख़सफ़ का माना है : धंस जाना, इस्तिलाह़ में चांद ग्रहन को ख़ुसूफ़ और सूरज ग्रहन को कुसूफ़ कहते हैं क्यूंकि उस वक़्त चांद, सूरज धंसा हुवा मह़सूस होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/379) फ़ुक़हाए किराम सूरज गहन को कुसूफ़ और चांद गहन को ख़ुसूफ़ कहते हैं मगर एक का दूसरे में इस्तिमाल भी ह़दीसे पाक में आया है। (नुज़्हतुल क़ारी, 2/623)

दुआ व इस्तिग़्फ़ार कीजिये !

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में एक मरतबा आफ़्ताब में गहन लगा, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए और बहुत त़वील क़ियाम व रुकूअ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़ी कि मैं ने कभी ऐसा करते न देखा

और येह फ़रमाया : अल्लाह पाक किसी की मौत व ह़यात के सबब अपनी येह निशानियां ज़ाहिर नहीं फ़रमाता लेकिन इन से अपने बन्दों को डराता है लिहाज़ा जब इन में से कुछ देखो तो ज़िक्रो दुआ व इस्तिग़फ़ार की त़रफ़ घबरा कर उठो। (بخاری،1/363،حدیث:1059) एक और ह़दीसे पाक में है कि सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते समूरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) ने गहन की नमाज़ पढ़ाई। (ابن ماجہ،2/93،حدیث:1264)

एक से ज़ियादा बार गहन की नमाज़ें पढ़ाईं

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए पाक में एक से ज़ियादा बार गहन की नमाज़ पढ़ाई हैं, जैसा कि मुख़्तलिफ़ रिवायात से ज़ाहिर होता है नीज़ एक बार मक्कए पाक मे ज़म ज़म शरीफ़ के साएबान में भी गहन की नमाज़ अदा फ़रमाई है। (नुज़्हतुल क़ारी, 2/631)

ह़ज़रते अब्दुर्रह़मान बिन समुरह رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी में मदीने में तीर अन्दाज़ी कर रहा था कि सूरज ग्रहन हो गया, मैं ने तीर फेंक दिये और सोचा कि रब की क़सम मैं देखूंगा कि सूरज गहन में आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم को क्या वाक़िआ पेश आया, मैं वहां आया तो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ में हाथ उठाए खड़े थे, आप तस्बीह़, तहलील व तक्बीर और ह़म्द कह रहे थे, दुआ मांग रहे थे ह़त्ता कि सूरज से ग्रहन खुल गया, जब ग्रहन खुल गया तो आप ने दो सूरतें पढ़ीं और दो रक्अत नमाज़ अदा की।[1] (مسلم،ص354،حدیث:2118)

शर्हे ह़दीस : ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से “मैं देखूंगा कि सूरज गहन में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم को क्या वाक़िआ पेश आया” के तह़त मुफ़्ती

1... ह़ज़रते अब्दुर्रह़मान बिन समुरह رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ की ह़ालत में पाया (आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहली रक्अत गहन की ह़ालत में और दूसरी रक्अत गहन खुलने के बाद अदा फ़रमाई। (شرح مسلم للنووی،جز:6،3/217)

अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : यानी हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उस वक़्त क्या कर रहे हैं ताकि मैं ख़ुद भी वोह अमल किया करूं और लोगों को तब्लीग़ भी करूं। ख़ुलासा येह है कि हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने नमाज़े ग्रहन में देर तक तस्बीह़ व तहलील वग़ैरा की फिर सूरए फ़ातिह़ा वग़ैरा पढ़ कर रुकूअ सज्दा वग़ैरा कर के सलाम फेर दिया। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/385)

अह़कामे शरअ पर मुझे दे दे अमल का शौक़ पैकर ख़ुलूस का बना या रब्बे मुस्त़फ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 131)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ख़ूब से ख़ूब नेकियां करने का वक़्त

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहज़ादी, तमाम मुसलमानों की प्यारी प्यारी अम्मी जान ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की बहन ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने आफ़्ताब गहने में ग़ुलाम आज़ाद करने का हु़क्म फ़रमाया। (بخاری، 1/362، حدیث:1054) कि उस वक़्त ग़ुलाम आज़ाद किये जाएं क्यूंकि इअताक़ और तमाम क़िस्म की ख़ैरात से अज़ाब दफ़्अ होता है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/386)

इमाम बदरुद्दीन ऐनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : सूरज ग्रहन में ग़ुलाम आज़ाद करना मुस्तह़ब है और इस का सबब लोगों को भलाई के कामों का शौक़ देना है। (عمدۃ القاری، 5/330)

इमाम इब्ने बत़्ताल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बेशक अल्लाह पाक बन्दों को अपनी निशानियों के ज़रीए डराता है ताकि वोह नेक आमाल कर के अल्लाह पाक का क़ुर्ब ह़ासिल करें जैसा कि इस मौक़अ पर नमाज़, ग़ुलाम आज़ाद करने और सदक़ा व ख़ैरात करने की तरग़ीब दिलाई गई है। (شرح ابنِ بطال، 3/46)

तू डर अपना इनायत कर रहें इस डर से आंखें तर
मिटा ख़ौफ़े जहां दिल से मिटा दुन्या का ग़म मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मसाइले फ़िक़्हिय्या

(बहारे शरीअत के चौथे हिस्से से सूरज और चांद ग्रहन के मुतअल्लिक़ कुछ दीनी मसाइल)

﴾1﴿ सूरज गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और चांद गहन की मुस्तहब। सूरज गहन की नमाज़ जमाअत से पढ़नी मुस्तहब है और तन्हा तन्हा भी हो सकती है और जमाअत से पढ़ी जाए तो ख़ुत्बे के सिवा तमाम शराइते जुमुआ इस के लिये शर्त हैं, वोही शख़्स इस की जमाअत क़ाइम कर सकता है जो जुमुआ की कर सकता है, वोह न हो तो तन्हा तन्हा पढ़ें, घर में या मस्जिद में।

(बहारे शरीअत, 1/787, हिस्सा :4)

﴾2﴿ गहन की नमाज़ उसी वक़्त पढ़ें जब आफ़्ताब गहना हो, गहन छूटने के बाद नहीं और गहन छूटना शुरूअ हो गया मगर अभी बाक़ी है उस वक़्त भी शुरूअ कर सकते हैं और गहन की हालत में इस पर अब्र आ जाए जब भी नमाज़ पढ़ें। (बहारे शरीअत, 1/787, हिस्सा :4)

﴾3﴿ ऐसे वक़्त गहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ ममनूअ है तो नमाज़ न पढ़ें, बल्कि दुआ में मश्ग़ूल रहें और इसी हालत में डूब जाए तो दुआ ख़त्म कर दें और मग़रिब की नमाज़ पढ़ें। (बहारे शरीअत, 1/787, हिस्सा :4)

मेरे आक़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर सूरज ग्रहन असर के बाद या निस्फ़ुन्नहार के वक़्त लगे तो लोग दुआ करेंगे और नमाज़ नहीं पढ़ेंगे, यानी इस वज्ह से कि इन दो (2) वक़्तों में नफ़्ल पढ़ना मकरूह है। (फ़तावा रज़विय्या, 5/129)

﴿4﴾ येह नमाज़ और नवाफ़िल की त़रह़ दो रक्अत पढ़ें यानी हर रक्अत में एक रुकूअ और दो सज्दे करें न इस में अज़ान है, न इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत और नमाज़ के बाद दुआ करें यहां तक कि आफ़्ताब खुल जाए और दो रक्अत से ज़ियादा भी पढ़ सकते हैं, ख़्वाह दो दो रक्अत पर सलाम फेरें या चार पर। (बहारे शरीअत, 1/788, हिस़्सा :4)

﴿5﴾ अगर लोग जम्अ न हुए तो इन लफ़्ज़ों اَلصَّلٰوةُ جَامِعَةٌ से पुकारें।

(बहारे शरीअत, 1/788, हिस़्सा :4)

﴿6﴾ अफ़्ज़ल येह है कि ईदगाह या जामेअ मस्जिद में इस की जमाअत क़ाइम की जाए और अगर दूसरी जगह क़ाइम करें जब भी ह़रज नहीं।

(बहारे शरीअत, 1/788, हिस़्सा :4)

﴿7﴾ अगर याद हो तो सूरए बक़रह और आले इमरान की मिस्ल बड़ी बड़ी सूरतें पढ़ें और रुकूअ व सुजूद में भी त़ूल दें (यानी लम्बा करें) और बादे नमाज़ दुआ में मशग़ूल रहें यहां तक कि पूरा आफ़्ताब खुल जाए और येह भी जाइज़ है कि नमाज़ में तख़फ़ीफ़ करें (यानी आम मामूल के मुत़ाबिक़ पढ़ें लम्बी न करें) और दुआ में त़ूल (यानी दुआ देर तक मांगें), ख़्वाह इमाम क़िब्ला रू दुआ करे या मुक़्तदियों की त़रफ़ मुंह कर के खड़ा हो और येह बेहतर है और सब मुक़्तदी आमीन कहें अगर दुआ के वक़्त असा या कमान पर टेक लगा कर खड़ा हो तो येह भी अच्छा है, दुआ के लिये मिम्बर पर न जाए।

(बहारे शरीअत, 1/788, हिस़्सा :4)

﴿8﴾ सूरज गहन और जनाज़े का इज्तिमाअ हो तो पहले जनाज़ा पढ़े।

(बहारे शरीअत, 1/788, हिस़्सा :4)

﴿9﴾ चांद गहन की नमाज़ में जमाअत नहीं, इमाम मौजूद हो या न हो बहर ह़ाल तन्हा तन्हा पढ़ें। इमाम के इलावा दो तीन आदमी जमाअत कर सकते हैं। (बहारे शरीअत, 1/788, हिस़्सा :4)

अमीरे अहले सुन्नत ने सूरज ग्रहन की जमाअत करवाई

अमीरे अहले सुन्नत की ख़िदमत में दौराने मदनी मुज़ाकरा चन्द बार सूरज ग्रहन लगने का तज़्किरा हुवा, एक मरतबा आप ने फ़रमाया : ज़हे नसीब ! मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में जमाअत क़ाइम कर लें, क़ुर्बो जवार के इस्लामी भाई आ जाएंगे नीज़ त़लबाए किराम और असातिज़ए किराम की अच्छी ख़ासी तादाद भी हमारे पास है तो जमाअत हो जाएगी। बहुत पुरानी बात है, मुझे याद पड़ता है कि जिन दिनों मैं "नूर मस्जिद" में इमामत करता था उन दिनों मैं ने सूरज गहन की नमाज़ की जमाअत क़ाइम की है। बाक़ी मस्जिदों में ऐसा सुना नहीं है और इस का रवाज भी नहीं है। मसाजिद की कमेटियां और जो इमाम साहिबान मुझे सुन रहे हैं वोह सूरज ग्रहन की नमाज़ की जमाअत की तरकीब करें। ऐसा ज़रूरी नहीं है कि 1000 आदमी हों तभी जमाअत होगी वरना नहीं, 10 या 20 हों तब भी जमाअत करें, क़बूलिय्यत का दारो मदार थोड़े या ज़ियादा पर नहीं, इख़्लास पर है। इस लिये मेहरबानी कर के जमाअत करवाएं क्यूंकि जमाअत अफ़्ज़ल है। चाहें तो उलमाए किराम से मशवरा भी कर लें। इस की जमाअत के लिये आप को टाइम का एलान करना पड़ेगा। भले जमाअत से पहले सूरज गहन के मसाइल और रिवायतें बयान करें, इस दौरान लोग जम्अ हो जाएंगे फिर आप नमाज़ पढ़ें और अल्लाह पाक की बारगाह में गिड़गिड़ा कर दुआ करें। इस से फ़ाएदा ही होगा, क्यूंकि येह नेकी और इबादत का काम है। मुल्क से बाहर वाले भी अपने अपने मुल्कों में वहां के वक़्त के हिसाब से तरकीब बना कर मसाजिद में ज़रूर सूरज गहन की जमाअत क़ाइम करें और जब भी ऐसा मालूम हुवा करे हर बार ऐसा ही किया करें। अल्लाह करीम तौफ़ीक़ अत़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! 18 सफ़र शरीफ़ 1445 को इस रिसाले पर काम मुकम्मल हुवा। अल्लाह करीम इस को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा कर दाइमी रिज़ामन्दी का ज़रीआ बना दे। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025